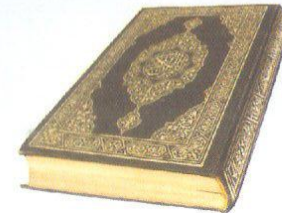


हमारी अन्य अहम खूबसूरत और मालूमाती पुस्तकें





इस्लाम खालिस क्या है ?



मुरत्तिब

मुहम्मद इस्माईल ज़र तारगर रहि०
हैदराबाद दकन



बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

पेश लफ़्ज़

نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم......امابعد

कब्ल इसके यह रेसालह "इस्लाम खालिस क्या है?" कईबार शाये होकर मंज़रेआम पर आचुका है। और अवामुन्नास भी इसके मुतालए से इस्तेफादा कर चुके हैं। अब यह अपनी नयी किताबत व नये सरवरक (टाईटल) से आरास्तह होकर फिर मंज़रेआम पर आ रहा है। इसलिए रेसालह का मकसद इतना है कि अवाम मौजूदा मसलकी झगड़ों की इबतेदा को समझें और सही दीनेखालिस की तरफ रूजू करें।

इस रेसालह की तबलीग और नश्रो एशाअत में जिन मुखैय्यर हज़रात का माली तआउन है। अल्लह तआला उनको इस कारेखैर का अज्रे अज़ीम अता करे।

आमीन

मुहम्मद इस्माईल ज़रतारगर रहमतुल्लाह अलैह

हम्द

सब तारीफ अल्लाह को सज़ावार है, जो रब्बुलआलमीन है, कुल कायनात व ज़मीन व आसमान का हकीकी मालिक है, वही कुल कायनात पर मोतसर्रफ व मोहीत है। वह अकेला वहदहु लाशरीक है। पाक व बे ऐब है वह समीअ व अलीम और बसीर है। सबका पालनहार है। वह दिन रात, चांद सूरज और सितारों का मालिक है। समुद्र और उसके अन्दर की कुल मखलूकात पर कादिर है। हम सब इसके दर के मोहताज, फकीर व गुलाम हैं। हम उसकी तारीफ करने से कासिर हैं, जिसकदर तारीफ की जाए कम है। अल्लाह तआला का बड़ा फज़्लो करम है कि उसने हम में आखिरी पैगम्बर रहमतुल्लिआलमीन हज़रत मुहम्मद सल्ल० को मबऊस फरमाया और हम को खैरेउम्मत के लकब से नवाज़ा। इस नेमते उज़्मा का जिस कदर शुक्र अदा करें कम है।

लमहए फिक्र

आज कल के बाज़ मुसलमान कुरआन व हदीस पर अमल करने वालों को नया फिरका व नया मज़हब के नाम से याद करते हैं। और फिर उससे मोतजाविज़ होकर चारों इमामों में से किसी एक इमाम की तकलीद न करने वालों को गैर मुकल्लिद व खारिज अज़ इस्लाम के लकब से नवाज़ते हैं और न मालूम क्या-क्या खेताबात चस्पां करते हैं। आखिर इस कुरआन व हदीस पर अमल करने की बुनियाद कब से है?

अवामुन्नास की आगाही के लिए यह रेसालह मुस्तनद सन् वारी पेश किया जा रहा है। और इस रेसाले का मकसद सिर्फ हर नवइयत के इब्तेदाई सन् को बतलाना है कि कुरआन व हदीस पर अमल कब से है और तकलीदे शख्सी और निस्बते अइम्मए मज़ाहिबे अरबअ कब से और यह किसतरह इस्लाम में दाखिल किए गए हैं? नीज़ तदवीने हदीस व तदवीने फिकह कब से हुई है? इसके अलावा अक्वाले अइम्मह को पेश करके तफसील के साथ लिखा गया है ताकि तकाबुल किया जाए कि कदीम और जदीद क्या है? अक्सर उलमाए सल्फ ने फिरकों की निस्बत बड़ी-बड़ी ज़खीम किताबें तसनीफ करके पेश की हैं लेकिन हमें इन तफसीलात में जाना नहीं है।

बेरादराने मिल्लत! मेरी आपसे सिर्फ यही गुज़ारिश है कि

एखलास की बुनियाद पर असबियत को हटा कर इस्लाही नुक्त-ए-नज़र से इंसाफ के पेशे नज़र गौरो फिक्र और कदीम व जदीद का जाएज़ा लें।

हमारे नबी मोहतरम ताजेदारे मदीना हज़रत मुहम्मद सल्ल० का दौरे नबुव्वत मक्की व मदनी २३ साल और दौरे खोलफाए राशेदीन ३० साल और दो सहाबा किराम तकरीबन ६० साल, इसी तरह जुमला तकरीबन सन् १ हिजरी ता ११० हिजरी तक रहा। वह सबके सब मुसलमान वह्य इलाही कुरआन व सुन्नते रसूल और इर्शादाते हज़रत मुहम्मद सल्ल० की इत्तेबाअ करते थे। यानी कुरआन व हदीस पर उनका अमल था। यह पहली सदी के मुसलमान इस्लाम के परवाने व शैदाई लाखों की तादाद में थे। इनकी निस्बत एक सवाल खुद बखुद पैदा होता है कि वह मुसलमान किस इमाम के मुकल्लिद थे? और किस इमाम की निस्बत से पुकारे जाते थे। क्या वह मुसलमान हनफी, मालिकी, शाफई, हम्बली थे?

दूसरा सवाल यह पैदा होता है कि क्या इन अइम्मह के अलाहिदह अलाहिदह मज़ाहिब उस वक्त राएज थे? तीसरा सवाल यह होता है कि पहली सदी के मुसलमान उम्मते रसूल सल्ल० खुलफा-ए-राशेदीन रज़ि० व सहाबा कराम रज़ि० जो कुरआन व हदीस पर अमल करते थे तो बकौल आज के बाज़ मुसलमान यह इल्ज़ाम उनपर आयद हो सकता है?

इन हर सवालात का जवाब لازما وكليتا وتسليما नफी में होगा। क्योंकि पहली सदी में अइम्मए अरबअह का नाम व

निशान ही न था और न उनकी वलादत ही हुई थी। ऐसी सूरत में यह बात मसल्लेमह हो गई कि तक़लीदे शख़्सी व निस्बते अइम्मह और मज़ाहिबे अइम्मा का पहली सदी में वजूद न था और इसकी तसदीक़ दोपहर के सूरज की तरह अइम्मए अरबअ के सन् वलादत से होती है। चुनांचह हज़रत इमाम अबू हनीफा रह० ८० हिजरी में पैदा हुए और इमाम मालिक रह० ६३ हिजरी में पैदा हुए और दीगर अइम्मह हज़रत इमाम शाफई व हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रह० दूसरी सदी में पैदा हुए। पस ऐसे बे बुनियाद इल्ज़ाम लगाने वालों को तौबा करनी चाहिए इस तरह की गुस्ताखी से बाज़ आ जाना चाहिए। न मालूम इस किस्म के लोग कियामत के दिन क्या जवाब देंगे? जबकि दुनिया में इनका कोई जवाब नहीं।

इस तफसील से साफ ज़ाहिर है कि:

इस्लाम नाम है- कुरआन व हदीस पर अमल करनेका

इस्लाम महदूद है- कुरआन व हदीस के दाएरे में

इस्लाम मुकम्मल दीन है- इसकी तसदीक़ वह्य इलाही कुरआन से होती है।

अल्लाह तआला ने हमारे नबी मोहतरम मुहम्मद सल्ल० के हज्जतुलवेदा के मौके पर यह आयते करीमा:

اليوم أكملت لكم دينكم وأتممت عليكم نعمتي
ورضيت لكم الاسلام دينا

"आज मैंने तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी करदी है और मैंने इस्लाम को तुम्हारा दीन पसन्द किया है।"

(मायदा:३)

नाज़िल फरमाकर इस्लाम के मुकम्मल होने की मुहर लगादी इसका कोई मुसलमान इनकार नहीं कर सकता। लेहाज़ा इस आयते करीमा की मौजूदगी में किसी मुसलमान उम्मती को हरगिज़ यह हक नहीं हो सकता कि इस्लाम में कोई नई चीज़ दाखिल करे या किसी चीज़ की कमी समझ कर इज़ाफा करे। अगर कोई उम्मती इस्लाम में इस किस्म की दखल अन्दाज़ी करेगा तो वह नऊज़ुबिल्लाह इस आयते करीमा का मुन्किर होगा। और ऐसे लोगों का कियामत मे क्या हश्र होगा? गौर करें।

अल्लाह तआला ने कुरआने करीम में बार-बार ताकीद के साथ कई जगह फरमाया:

اطيعوا الله واطيعوا الرسول

"इताअत करो अल्लाह की और इताअत करो रसूल की"

(तगाबुन:१२)

और इर्शादे नबवी है:

"मूसा अलैहि० की उम्मत में ७२ फिरके थे। मेरे बाद मेरी उम्मत में ७३ फिरके होंगे जिनमें ७२ फिरके दोज़खी होंगे और एक फिरका जन्नती होगा। सहाबा

किराम रज़ि० ने दर्याफ्त किया या रसूलुल्लाह सल्ल० वह कौनसा फिरका होगा? आपने फरमायाः (ماانا عليه واصحابی) जिस राह पर मैं हूं और मेरे सहाबा रज़ि०

पस जबकि हमारे नबी मोहतरम हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने जन्नत के रास्ते की पहचान साफ तौर पर बतला दी है तो फिर हमको दूसरे रास्ते की ज़रूरत बाकी न रही। इसके बावजूद अगर कोई शख्स किसी उम्मती के तौर तरीके को तरजीह देता है और इस पर अमल करता है तो वह किस मुकाम को हासिल करता है खुद अपनी अक्लेसलीम से फैसला कर ले।

मेरे अज़ीज़ दोस्तो! इससे साफ मालूम हुआ कि इस्लाम खालिस, कुरआन व हदीस है। इस पर अमल करने वाला फलाहे दारैन का मुस्तहिक है। यह इब्तिदाए इस्लाम से है, कोई नया मज़हब नहीं है। और न नया फिरका बल्कि एक जमाअत है जो कुरआन व हदीस पर अमल करती है।

अब तदवीने हदीस की निस्बत अर्ज़ करना है कि हदीस की तदवीने मुबारक अहदे नबुव्वत में हुई है हदीस का ज़खीम मजमूआ अहदे नबुव्वत में मौजूद था। इस के बाद एक दूसरे से खुलफा-ए-राशेदीन रज़ि० और सहाबा किराम रज़ि० के पास मुन्तकिल होता रहा किसी ने लिख लिया तो किसी ने ज़बानी याद कर लिया। अगर यह न होता तो कुरआने अज़ीमुश्शान और हदीसे रसूलुल्लाह पर अमल करना ना मुम्किन था लिहाज़ा पहली सदी में हदीस का मजमूआ पाया जाना मुसल्लेमा है। इसके बाद दूसरी सदी में अइम्मए.अरबआ व मुहद्देसीन ने मज़ीद हदीसों

को जमा कर के कुतुबे हदीस लिखी हैं। यह अमर तो मुसलेमा है सारे आलम के उलमा-ए-किराम खास व आम इसकी तसदीक करते हैं और इससे मुत्तफिक हैं।

दूसरी और तसीर सदी का दौर अइम्म व मुहद्देसीन का रहा उस वक्त अगर कोई मसला दर पेश आता तो लोग अइम्मा से मुराजअत करते वह कुरआन व हदीस से या अपनी राय व केयास पेश करते हुए खौफे खुदा और तकवा की बिना पर साफ इर्शाद फरमाते थे कि अगर यह कुरआन व हदीस के खिलाफ होतो इसे छोड़ दो, इस लिहाज़ से गोया सब के सब अइम्मा और उस दौर के मुसलमान कुरआन व हदीस पर ही अमल करते थे। तमाम अइम्मा ने अच्छी और सच्ची बातें कही हैं। उनके अक्वाल काबिले एहतराम हैं जो आगे रिसाले में पेश हैं। वह अइम्मा आबिद व मुत्तकी, परहेज़गार व मूवहिद मुत्तबे सुन्नत कुरआन व हदीस के पाबन्द सल्फेसालिहीन का नमूना थे। किसी ने भी अपनी तकलीदे शख्सी व निस्बत फिरका बन्दी के लिए नहीं फरमाया और न ही कोई अपनी तरफ से अलाहिदा अलाहिदा मज़हब मुरत्तब करके राएज किया। लिहाज़ा उनके अक्वाल के मुताबिक-

अगर हो मुकल्लिद तो अमल करके बताओ
बनते हो वफादार तो वफा करके दिखाओ

अल्लाह तआला अइम्मा की कब्रों को नूर से भर दे और उन्हें अपनी रहमत से नवाज़े। आमीन

मेरे अज़ीज़ भाईयो! पहली सदी तो क्या तीसरी सदी में भी तकलीद शख्सी व निस्बत अइम्मह के नाम का फिरका हनफी, मालिकी, शाफई, हम्बली का वजूद न था होश व हवास से कहो कि नया क्या है? और पुराना क्या है?

चौथी सदी से तकलीदे शख्सी की इब्तेदा हुई मगर निस्बत अइम्मह नाम के फिरकों का वजूद अमल में न आया। इस मकाम पर यह बात तसलीम करना होगी कि चौथी सदी में भी इस निस्बते अइम्मह का नाम मंज़रे आम पर न था।

सनूवारी का लिहाज़ करते हुए अब कुतबे फिकह की इब्तेदा को पेश किया जा रहा है इसके बाद तकलीदे शख्सी की निस्बत मज़ीद आगे तफसील पेश की जाएगी।

फिकह की पहली किताब कोदूरी ४२८ हिजरी में लिखी गई है इसके बाद और कुतबे फिकह लिखी गई इस तरह कुतबे फिकह की तदवीन पांची सदी से हुई। तकाबुल करें कि तदवीने हदीस की बुनियाद इब्तेदाए इस्लाम से ही है और इस्लाम की बुनियाद कुरआन व हदीस है। लिहाज़ा कुरआन व हदीस पर अमल कदीम से होना अज़हर मिनश्शम्स है। तकलीदे शख्सी की निस्बत मज़ीद तफसील यह है कि चौथी सदी या छटी सदी तक तकलीद का सिलसिला जारी रहा। जब इसकी रफतार रोज़ बरोज़ बढ़ती गई तो उस वक्त के सलातीन का मैलान भी तकलीद की जानिब होता गया। यहां तक कि ६५ हिजरी में सलातीन की जानिब से अक्सर मकामात पर फिरका बन्दी के साथ निस्बते अइम्मह व मज़ाहिबब हन्फी, मालिकी, शाफई, हम्बली के चार

काज़ी मुकर्रर हुए लिहाज़ा सातवीं सदी से उन नामों की निस्बत मंज़रे आम पर आयी और तकलीदे शख्सी का आगाज़ हुआ। उन नये फिरकों और मज़हबों को इस तरह सातवी सदी में दाखिले इस्लाम किया गया। गौर करने की एक खास बात यह है कि सातवीं सदी में एक खालिस इस्लाम के चार हिस्से कर के कुतबे फिकह को मज़हबे अइम्मह तरतीब दे कर एक-एक हिस्सा मज़हब का मुकल्लेदीने अइम्मह ने इख्तियार कर लिया। इस पर तुर्रह यह कि उसको कदीम और इब्तेदाए इस्लाम से सातीवी सदी तक के कुरआन व हदीस पर अमल करने वालों को जदीद कहने की जुरअत करने लगे यह किस कदर नाइंसाफी की बात है।

खूब याद रखो और यकीन करो कि आखिरत की पहली मंज़िल कब्र है जिसे आखिरत के इम्तिहान का पहला पर्चा कहना बेजा न होगा। अल्लाह तआला की तरफ से तीन सवालात किए जाएंगे जिन में हरगिज़ न पूछा जाएगा कि तेरा मज़हब किस इमाम का है? और तेरा इमाम कौन है? बल्कि तीन सवालात वही होंगे जो हमारे नबी मोहतरम अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने बतलाए हैं:

तेरा रब कौन है? من ربک؟

तेरा दीन क्या है? ما دینک؟

तेरा नबी कौन है? ما هذا الرجل الذی کان فیکم؟

इनके जवाबत यूं देने होंगे और यह जवाबात भी अल्लाह के रसूल सल्ल० ने वाज़ेह फरमा दिए हैं:

मेरा रब अल्लाह है। ربی الله

मेरा दीन इस्लाम है। دینی الاسلام

मेरे नबी अल्लाह के बन्दे व रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० हैं। (अहमद)

इस तरह कब्र के सवालात के जवाबात से कामयाबी होगी और अज़ाबे कब्र से नेजात मिलेगी। यह सही जवाबात उसीको नसीब होंगे जिसने दुनिया की ज़िन्दगी में खालिस इस्लाम पर अमल किया हो। और अगर उसके बरखिलाफ अमल हुआ तो ज़ाहिर है कि जवाबात भी खिलाफ होंगे। ऐसी सूरत में अज़ाबे कब्र कियामत तक होता रहे गा। उसके बाद रोज़े महशर आएगा तो वहां सब के सब जमा होंगे हर एक अपने-अपने अमल के मुताबिक सज़ा जज़ा पाएगा उस वक्त कोई किसी के काम न आएगा अल्बत्ता अमले सालेह (बमूजिब कुरआन व हदीस) निजात का ज़रीया होगा। इर्शाद नबवी सल्ल० है:

> रोज़े महशर में अपने हौज़ (कौसर) पर सबसे पहले पहुचूंगा जो मेरे पास से गुज़रेगा वह उस हौज़ का पानी पिएगा और जिसने पी लिया वह कभी प्यासा न होगा। कुछ लोग मेरे पास आयेंगे उनको मैं पहचानता हूंगा और वह भी मुझे पहचानते होंगे, उनको मेरे पास आने से रोक दिया जाएगा मैं कहूंगा, यह मेरे उम्मती हैं, तो मुझ से कहा जाएगा। "आप नहीं जानते कि

> आपके बाद उन लोगों ने क्या-क्या नयी-नयी बातें दीन में निकाली थीं, तो मैं कहूंगा, سحقا سحقا لمن غیر بعدی दूरी हो दूरी हो, यानी ऐसे लोगों को मैं अपने पास से धुतकार दूंगा।"
>
> (बुखारी व मुस्लिम)

और एक दूसरी रिवायत का खुलासा यह है कि:

> हश्र के रोज़ तमाम लोग मिलकर हज़रत आदम अलैहि० के पास हाज़िर होकर कहेंगे कि आप अल्लाह तआला के पास हमारी सिफारिश कीजिए वह कहेंगे कि मैं अल्लाह तआला के सामने जाने से डरता हूं, तुम्हारी सिफारिश करने को तैयार नहीं हूं, तुम सब फुलां-फुलां के पास जाओ, तो फिर तमाम लोग हज़रत नूह अलैहि० व हज़रत इब्राहीम अलैहि० व हज़रत मूसा अलैहि० व हज़रत ईसा अलैहि० के पास जाएंगे वह सब के सब यही कहेंगे अल्लाह तआला के सामने जाने से हम डरते हैं और हम इस लायक नहीं हैं कि तुम्हारी सिफारिश करें। तुम सब आखिरी नबी मुहम्मद सल्ल० के पास जाओ चुनांचे आखिर में हज़रत मुहम्मद सल्ल० के पास हाज़िर होंगे तो आप सिफारिश करने पर आमादा होकर दरबारे खुदावन्दी के मकामे महमूद में सज्दा रेज़ होंगे और दुआ

करेंगे अल्लाह की इजाज़त से शफाअत करके
जन्नत में पहूंचाएंगे । (बुखारी)

इन रिवायात से साफ ज़ाहिर है कि आबे कौसर और शफाअत रसूलुल्लाह सल्ल० की उन लोगों को ही नसीब होगी जिन्होंने आपकी फरमाँ बरदारी करते करते आखिरी सांस छोड़ी होगी।

गौर करो! जब अल्लाह तआला के मखसूस पैगम्बरों से किसी की सिफारिश न हो सकी तो फिर हमा शुमा उम्मती का क्या शुमार, किस गिनती में, गर्ज़ कि सिर्फ हमारे नबी मोहतरम हज़रत मुहम्मद सल्ल० ही सिफारशी होंगे। लिहाज़ा इस्लाम खालिस यही है कि हम मुत्तबे रसूल हों कुरआन व हदीस पर अमल करें। इसमें दिन व दुनिया और आखिरत की भलाई है। तकलीद शख्सी की निस्बत बलिहाज़ सनू वारी मज़ीद तफसील से यह है कि सातवीं व आठवीं सदी में तकलीद का दौर तरक्की पर रहा। चूंकि सलातीन की पुश्तपनाही थी, नवीं सदी की इब्तिदा में सुल्तान फरह बिन बरकूक ने मक्का मुअज़्ज़मा बैतुल्लाह शरीफ के एहाता में मुसल्ला इब्राहीमी के अलावा चार मुसल्ले हनफी, मालिकी, शाफई, हम्बली मज़हब के नाम से कायम कर दिए। हालांकि इब्तिदाए इस्लाम से नवीं सदी तक सिर्फ एक ही मुसल्ला इब्राहीमी था इस तरह ये नये चार मुसल्ले बज़ोर सुल्तान इस्लाम में दाखिल किए गए।

यह मुसल्ले नौवीं सदी से तेरहवींसवदी तक बर करार रहे। मुकल्लेदीन अपने अपने मुसल्ले पर मंसूब शुदह अकायद के

इमाम के साथ नमाज़ अदा करते रहे एक मुसल्ले के बाद दूसरे मुसल्ले पर नमाज़ अदा करने का इन्तिज़ाम था।

चौदहवीं सदी १३४३ हिजरी में शाह अब्दुल अज़ीज़ बानी सऊदी हुकूमत ने इस्लाम में नये दाखिल शुदह उन चारों मुसल्लों हो बरखास्त कर के फिर हस्बे साबिक सिर्फ एक मुसल्ला इब्राहीमी को अपने मकाम पर कायम रखा जो इब्तिदाए इस्लाम से था। जो आज तक है उसी मुसल्ला इब्राहीमी से जुमला नमाज़े अदा होती हैं आज कल के हुज्जाज किराम से उसकी तसदीक की जा सकती है।

बेरादराने मिल्लत! इन तमाम वाकियात की तसरीहात से यह नतीजा बरामद होता है कि कुरआन हदीस पर अमल करने वाले हक पर हैं और इब्तिदाए इस्लाम से अब तक उसपर कायम व मौजूद हैं ता कियामत यह जमाअत बाकी रहेगी।

आज कल के बाज़ मुसलमानों की मिसाल गुम्बद में आवाज़ लगाने वालों की तरह है उनकी आवाज़ लौट कर उन्हीं पर चिस्पां होती है वह अपने को कदीम और दूसरों को जदीद कहने वाले खुद जदीद होकर मंज़रे आम पर आगए गोया इल्ज़ाम आयद करने वाले खुद अपने आप इल्ज़ाम के मुस्तहिक हो गए।

मेरे मुस्लिम भाईयो! मुसलमान होने पर यह लाज़िम होता है कि कुरआन व हदीस पर अमल करें उसके बगैर मुसलमान होने का दावा बातिल है इब्तिदाए इस्लाम के मुसलमान का और उस वक्त से लेकर आज तक के मुसलमान का अकीदा एक है यह कि अल्लाह एक, कुरआन एक, रसूल एक, फिर आज हम सब

मुसलमानों को क्या हो गया कि इस्लाम खालिस कुरआन व हदीस पर अमल करके दीन व दुनिया और आखिर की भलाई हासिल न करें। क्या आज इस्लाम से दूरी की वजह से हम दुनियाके मसाएब व मुश्किलात से दोचार नहीं हैं?

क्या अल्लाह तआला की रहमत हमसे दूर नहीं है? क्या यह नक्शा हमारे सामने नहीं है? अगर है तो फिर क्यों न हम अपनी ज़िन्दगी को इस्लामी ज़िन्दगी बनाएं आज के दौर में इस बात की सख्त ज़रूरत है कि एक दूसरे पर इल्ज़ामात के दरवाज़ों को बन्द करें। तंग नज़री को छोड़ दें, उसअत नज़री से काम लें। इस्लामी तालीम का तकाज़ा व मकसद यही है कि सारे मुसलमान आपस में भाई-भाई बन कर रहें इत्तेहादी ज़िन्दगी बसर करके नेक और एक हो जाएं, फरमाने खुदावन्दी ﴿انما المؤ منون اخوة﴾ (सूर: अल हुजरात:१०) के मुताबिक अमली ज़िन्दगी गुज़ार कर अल्लाह तआला की नेमतें और रहमतें हासिल करें।

आगे नफ्स मज़मून में अहदे नबुव्वत सल्ल० में हदीस लिखे जाने के दलायल व दीगर कुतबे हदीस व कुतबे फिकह की तदवीन, वेलादत अइम्मा व दौरे खुलफा-ए-राशिदीन सन् वारी और मुख्तसर अइम्मा की ज़िन्दगी और उनके अकवाल की तफसीलात दर्ज हैं। हमारी ज़िम्मेदारी हक बात को पेश करना है अल्लाह तआला तौफीक व हिदायत दे। आमीन

मुहम्मद इस्माईल ज़रतारगर रहि०

दाओी इलल्लाह

अल्लाह तआला अपने रसूल मुहम्मद सल्ल० को मुखातिब करके फरमा रहा है

﴿وما ارسلنک الا کافة اللناس بشیرا و نذیرا﴾

"हमने आपको तमाम लोगों के लिए खुशखबरियां सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है।"

(सबा:२८)

इसके बाद अल्लाह तआला आपने रसूल मुहम्मद सल्ल० को हुक्म दे रहा है कि आप अपनी ज़बाने मुबारक से सब लोगों को मुखातब करके ऐलान करें कि:

﴿قل یا ایها الناس انی رسول الله الیکم جمیعا﴾

"ऐ लोगों! मैं तुम सब की तरफ अल्लाह का रसूल हूं।"

(आराफ:१५८)

उसके बाद फिर अल्लाह ने अपने रसूल को दाओी इलल्लाह बनाते हुए फरमाया:

﴿یا ایها النبی انا ارسلنک شاهدا ومبشرا و نذیرا ☆
وداعیا الی الله باذنه و سراجا منیرا﴾

"ऐ नबी हमने आपको शाहिद और बशारत देने वाला और डराने वला बना कर भेजा। आप अल्लाह तआला की तरफ से दाओी इलल्लाह हैं और रौशन चिराग हैं।"

(अहज़ाब:४५-४६)

इस ऐलान के बाद इस्लाम में दाखिल होने के लिए इंसान को कलम-ए-शहादत (तौहीद) का इकरार उसके साथ ही रिसालत का इकरार करना ज़रूरी होता है। कलमा-ए-शहादत इस्लाम का पहला रूक्न है। इस कलमा का ज़बान से इकरार करने वाला और दिल से यकीन रखने वाला मुसलमान कहलाता है इसके साथ ही अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर अमल करने वाला ईमान्दार कहलाता है गोया अमल से कलम-ए-शहादत की तसदीक होती है। लिहाज़ा कुरआन व हदीस पर अमल करना मुसलमान की निशानी है।

कुरआन व हदीस की तारीफ

कुरआनः किताबे इलाही को कहते हैं जो लौहे महफूज़ से अल्लाह के हुक्म से हज़रत जिबरईल अलैहि० फरिश्ते के ज़रीआ वह्य से हमारे प्यारे नबी आखिरूज़्ज़मा खतमुलमुर्सलीन रहमतुललिलआलमीन हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर वक्तन फवक्तन थोड़ा-थोड़ा करके २३ साल के अर्से में उतारा गया।

हदीसः हदीस के लगवी माना "बात" के हैं।

अल्लाह तआला अपने कलामे पाक कुरआन को हदीस हदीस फरमाया है:

(१) ﴿الله نزل احسن الحديث﴾

"अल्लाह ने बेहतरीन कलाम नाज़िल किया है।"

(ज़ुमर:२३)

(इस आयते करीमा में कुरआन को हदीस कहा गया है।)

(२) ﴿فبأی حديث بعد الله و اياته يو منون﴾

पस अल्लाह तआला और उसकी आयतों के बाद यह किस बात पर ईमान लाएंगे? (जासिया:६)

इस आयते करीमा में कुरआन की आयात को हदीस कहा गया है।)

(३) ﴿فبا ی حديث بعده يومنون﴾

"फिर अब इसके बाद किसा बात पर ईमान लाएंगे?"

(आराफ:१८५)

तशरीहः- अल्लाह की किताब और उसके रसूल सल्ल० के आ जाने के बाद भी यह राहेरास्त पर न आये तो अब किसकी बात मानेंगे?

(इस आयते करीमा में अल्लाह की किताब कुरआन को

हदीस कहा गया है।) अल्लाह तआला ने अपने नबी मुहम्मद सल्ल० की बात को अपने कलामे पाक कुरआन में हदीस फरमाया है:

﴿واذ اسر النبي الى بعض ازواجه حديثا﴾

"जब नबी ने अपने बाज़ औरतों से एक पोशीदा बात कही।"

(तहरीम:३)

बमूजिब फरमाने इलाही का हदीस होना और नबी मोहतरम मुहम्मद सल्ल० की बात का भी हदीस होना अज़हर मिनश्शम्स है।

इस्तलाहे इस्लाम में नबी-ए-मोहतरम हज़रत मुहम्मद सल्ल० की बात यानी कौल व फेल और तकरीर को हदीस कहते हैं।

कौल: इसको कहते हैं जो आपने फरमाया।

फेल: इसको कहते हैं जो आपने हुक्म दिया।

तकरीर: इसको कहते हैं जो आपकी मौजूदगी में अमल पैदा हुआ और आपने सोकूत इख्तियार किया।

लिहाज़ा कुरआन व हदीस इस्लाम की बुनियाद हैं इसकी तसदीक अल्लाह तआला का कलाम कुरआन पाक है।

पहली सदी

(१) दौरे नबुव्वत सल्ल०: हज़रत मुहम्मद सल्ल० की नबुव्वत का अह्द मुबारक मक्का मुअज़्ज़मा में तेरह (१३) साल गुज़रा

इसके बाद मक्का मुअज़्ज़मा से हिजरत करके अल्लाह के हुक्म से मदीना तैयबा पहुंचे। उस वक्त से सन् हिजरी की इब्तेदा हुई है। मदीना तैयबा में नबुव्वत का अह्द मुबारक १० साल रहा।

इसतरह जुमला २३ साल दौरे नबुव्वत के गुज़रे इस अर्से में शमए इस्लाम का नूर सारे आलम में फैला लाखों की तादाद में मुशरेकीन अरब व अजम मुशर्रफ बइस्लाम हुए यह सब के सब मुसलमान वह्य इलाही (कुरआन) व फरमाने रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल० (हदीस) की इत्तिबा करते थे, इसके बाद खुलफा-ए-राशिदीन राज़ि० का दौर तकरीबन तीस साल गुज़रा जिसकी तफसील दर्ज ज़ैल है-

दौरे खुलफा-ए-राशिदीन रिज़० (मिशकात जि०-४ स-५६)

(१) हज़रत अबू बकर सिद्दीद रज़ि० का दौरे खेलाफत ११ हिजरी ता १३ हिजरी (२ साल ३ माह ६ दिन)

(२) हज़रत उमर फारूक रज़ि० १३ हिजरी ता २३ हिजरी (१० साल ५ माह ४ दिन)

(३) हज़रत उस्मान गनी रज़ि० का दौरे खेलाफत २३ हिजरी तस ३५ हिजरी (१२ साल)

(४) हज़रत अली रज़ि० ३५ हिजरी ता ४० हिजरी (४ साल ६ माह)

जुमला दौरे खेलाफत: २६ साल ५ माह १३ दिन।

इस दौर के तमाम मुसलमान सिर्फ वह्य इलाही (कुरआन)

और सुन्नते रसूल (हदीस) पर अमल करते थे।

दौरे सहाबा ४० हिजरी ता १०० हिजरी तकरीबन साठ साल का गुज़रा इस पहली सदी के आखिरी सहाबा किराम रज़ि० की तफसील दर्ज ज़ैल है।

(१) मदीना तैयबा के सहाबा में हज़रत सहल बिन. साद रज़ि० बइख्तिलाफ रिवायत ८८ हिजरी ता ६१ हिजरी ६६ साल या १०० साल की उम्र में वफात पाई।

(२) बसरा के सहाबा में हज़रत अनस बिन मालिक ने बइख्तिलाफ रिवायत ६० हिजरी या ६३ हिजरी से ज़्यादा १०३ साल की उम्र में वफात पाई।

(३) मक्का मुअज़्ज़मा के सहाबा रज़ि० में हज़रत अबू तुफैल आमिर बिन वासेला सब से आखिरी सहाबी थे जिन्होंने १०० हिजरी या बइख्तिलाफ रिवायत ११० हिजरी में वफात पाई इस तरह पहली सदी के खत्म के साथ ही सहाबा किराम रज़ि० का दौर खत्म हुआ। पहली सदी के यह तमाम मुसलमान कुरआन व हदीस पर अमल करते थे इस्लामी तालीम का माखज़ यही था इसके सिवा कोई दूसरा न था।

अह्दे नबुव्वत में तदवीन हदीस के दलायल

रसूलुल्ल सल्ल० के मुबारक जमाने में कुरआन मजीद की तरह हदीसें भी लिखी जाती थीं। इसका बड़ा इन्तिज़ाम व एहतमाम था।

(१) قيدو العلم इल्म और हदीस को लिखकर मुकैयद कर लिया करो। (हाकिम ब्यानुल इल्म ज-१ स-७३)

(२) اكتبوا ولا حرج। हदीस को लिखो कोई हरज नहीं (मजमउज़्ज़वाएद स-६०)

(३) اكتبوا لابى شاه। अबू शाह को मेरी हदीस व खुत्बा लिखकर दे दो (बुखारी व मुस्लिम)

(४) استعن بيمينك واومايده (ऐ अबू राफे) अपने दायें हाथ से मेरी हदीस लिख लिया करो। (तिर्मीज़ी-३८२)

(५) واكتبو الى من يلفظ بالاسلام कलमागो मुसलमानों का नाम लिखकर मुझे दो। (बुखारी ज-१ स-४३०)

(६) मदीना के यहूदियों को सहीफा-ए-अमन लिखवाकर दिया था। रसूलुल्लाह सल्ल० ने अपने और यहूद और दीगर मुसलमानों के लिए अमन नामा लिखवा दिया। (सुनन अबी दाऊद-२ स-२५)

(७) हुदैबिया में सुलह नामा लिखवा दिया। (बुखारी ज-१ स-३७२)

(८) मुहम्मद सल्ल० ने अली रज़ि० को एक रिसाला लिखवा कर दिया जिसमें मदीने का हरम होना, मसाएले जराहात, ऊंटों की उमरें, ज़मीनों के एहकाम, ज़बह बेगैरूल्लाह की हुरमत, ज़मीन की चोरी पर लानत, वालिदेन को बुरा कहने पर लानत, बिदअती को पनाह देने पर लानत वगैरह के मसाएल थे।

(९) अली रज़ि० फरमाते हैं, हमने रसूल सल्ल० से कुरआन मजीद लिखा है और इस सहीफे यानी हदीस के इस रिसाले को। (बुखारी)

(१०) इब्ने उमर रज़ि० फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने किताबुस्सदका लिखवाई फिर आपका इन्तेकाल हो गया। यह किताब हाकीमों के पास रवाना न की जा सकी आपके बाद अबू बकर रज़ि० ने इस पर अमल किया फिर अबू बकर रज़ि० के इन्तेकाल के बाद उमर रज़ि० ने इस पर अमल किया। यह किताब उमर के खान्दान में महफूज़ रही। उमर के पोते सालिम रज़ि० ने यह किताब इमाम ज़हरी रहिम० को पढ़ने के लिए दी जिसे इमाम ज़हरी रहिम० ने याद कर लिया। इसकी नकल खलीफा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने कराई। (अबू दाऊद बेहकी, मुस्तदरक हाकिम ज-१ स-२९२)

(११) मुहम्मद सल्ल० ने अपने आखिरी अहद में हदीस की एक ज़खीम किताब जिसमें तिलावते कुरआन मजीद, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, तलाक व एताके, केसास, दियत और दीगर

फराएज़-व सुनन और कबीरह गुनाहों की तफसील तहरीर करवाके अम्र बिन हज़्म रज़ि० की मारेफत यमन वालों के पास भेजवाई थी। (दारे कुत्नी, दारमी, बेहकी, मस्नद अहमद, इब्ने खज़ीमा, इब्ने हेबान, मूता इमाम मालिक, सुनन निसाई)

जामइयते मसायल के लिहाज़ से इस किताब को हदीस की पहली किताब कहना चाहिए जो मुहम्मद सल्ल० ने खुद ही लिखवाई है इसी तरह सरदाराने अरब शाहाने अजम को दावते इस्लाम की तहरीरें भेजी थीं।

(१२) हेरक्ल बादशा ने रसूलुल्लाह सल्ल० का वह नाम-ए-मुबारक मंगवाया वह आपने वह्य कलबी को सन् ६ हिजरी में देकर बसरा के हाकिम के पास भेजा था वह हेरक्ल के पास भेजवाया। (बुखारी शरीफ ज-१ स-४)

(१३) मुआज़ रज़ि० के साहब ज़ादे का इन्तेकाल मदीना मुनव्वरह में हो गया मुआज़ यमन में थे उन्हें बड़ा रंज व अफसोस हुआ तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने मुआज़ रज़ि० के पास ताज़ियत नामा तहरीर करवाकर रवाना फरमाा (मुस्तदरक हाकिम ज-३ स-३७३ तारीखे खतीब ज-३ स-८६)

(१४) अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि सहाबा किराम में मुझ से ज़्यादा अहदीसे रसूल को रिवायत करने वाला कोई नहीं है मगर अब्दुल्लाह बिन उम्र इससे मुस्तसना हैं इसलिए वह हदीसों को लिखा करते थे और मैं लिखता नहीं था। सिर्फ ज़बानी याद कर लिया करता था। (बुखारी, तिर्मिज़ी)

(१५) अबू हुरैरह रज़ि० ५३७६ हदीसों के हाफिज़ थे।

हज़रत बशीर बिन नहीक रहम० ताबई से मरवी है कि मैं अबू हुरैरह रज़ि० से हदीस सुनता था तो लिख लिया करता था। तो फिर जब मैंने उनसे रूखसत होने का इरादा किया तो किताब लेकर उनकी खिदमत में हाज़िर हुआ और पढ़कर सुनाया फिर उनसे दरयाफ्त किया कि यह सब वही हदीसें हैं जो मैंने आपसे सुनी हैं? फरमाया हां (सुनन दारमी)

(१६) रसूलुल्लाह सल्ल० ने मरज़ुलमौत में एहकाम ज़रूरिया जैस जज़ीर-ए-अरब से मुशरिकीन व यहूद का अखराज, वफूद की खातिरदारी, तजहीज़, जैश ओसामा रज़ि० कब्र नबवी को सजदागाह न बानाने और खिलाफते अबू बकर रज़ि० वगैरह उमूर तहरीर कराने के लिए कलम व दवात कागज़ तलब फरमाया قال ايتونى اكتب لكم كتابا (बुखारी ज-१ स-४४६, मुस्लिम ज-२- स-४२)

बहरहाल इस किस्म के नबवी सल्ल० नविश्ते बहुत हैं। मज़मून की तवालत के खौफ से मुख्तसर पेश किया गया है जिनसे साफ ज़ाहिर है कि मुहम्मद सल्ल० अपनी ज़िन्दगी ही में अपनी हदीसों को खास एहतमाम से मौका बमौका लिखवाया करते थे। चुनांचे मुतअद्दद असहाबे किराम रज़ि० ने उन अहादीस को जमा व महफूज़ किया मज़ीद तफसील दर्ज ज़ैल है।

(१७) एक सहीफा "सादिकह" के नाम से मशहूर है जिसे अम्र बिन आस रज़ि० ने तैयार किया था इसमें हज़ार से कुछ

कम हदीसें जो मुस्नद अहमद में मौजूद हैं।

(१८) एक सहीफा "सहीहह" के नाम से मशहूर है जिसे हमाम बिन मुनब्बा अबू हुरैरह रज़ि० के शागिर्द ने तैयार किया है। उसकी अहादीस भी मुस्नद अहमद में मौजूद हैं और इमाम बुखारी व मुस्लिम ने भी अपनी किताबों में शामिल की हैं। इस मजमूए का कल्मी नुस्खा अबतक दमिश्क व बर्लिन की लाइब्रेरियों में महफूज़ है।

(१९) एक सहीफा मुस्नद अबू हुरैरह रज़ि० के नाम से याद किया जाता है। इसमे अबू हुरैरह रज़ि० की तमाम मरवियात मौजूद हैं और इसका कल्मी नुस्खा जर्मनी की लाइब्रेरी में मौजूद है।

(२०) एक सहीफा अली रज़ि० के नाम से मशहूर है।

(२१) हज्जतुलविदा के खुतबा को खुद रसूलुल्लह सल्ल० के हुक्म से लिखा गया।

(२२) एक सहीफा जाबिर बिन अब्दुल्लाह के नाम से मशहूर है जिसे उनके दो शागिर्द वहब बिन मुनब्बा और सलमान बिन कैस लशकरी ने तैयार किया था।

(२३) सहीफ-ए-आइशा रज़ि० जिसे अम्र बिन जुबैर ने तैयार किया था।

(२४) एक सहीफा अब्दुल्लाह बिन अब्बास के नाम से मशहूर है। इस सिलसिले में सईद हेलाल रिवायत करते हैं कि अनस ने अपना सहीफा हमें दिखलाया और कहा कि यह अहदीस मैंने रसूलुल्लह सल्ल० से सुनीं और लिखलीं। फिर मैंने

रसूलुल्लाह सल्ल० को दिखलाईं और आपने इसकी तसदीक भी फरमादी। (तफसीलात के लिए देखें इत्तेबाए सुन्नत के मसाएल अज़ इकबाल कीलीनी)

दूसरी व तीसरी सदी

वलादते अइम्म-ए-अरबअ

नाम	सन् वलादत	सन् वफात	उम्र	साकिन	तसनीफ
अबू हनीफा रहि०	८० हि०	१५० हि०	७० साल	कूफा	....
इमाम मालिक रहि०	९३ हि०	१७९ हि०	८६ साल	मदीना	मुअत्ता मालिम
इमाम शाफई रहि०	१५० हि०	२०३ हि०	५४ साल	मिस्र बगदाद	मुस्नद शाफई
इमाम अहमद बिन हंबल	१६४ हि०	२४१ हि०	७७ साल	दमिश्क	मस्नद अहमद

दोसरी सदी हिजरी से अइम्म-ए-अरबअ का दौर शुरू हुअ। हमारे नबी मोहतरम जनाब मुहम्मद सल्ल० से तरबियत याफ्त सहाबा किराम राज़ि० अल्लाह को प्यारे हो गए आए दिन मसाएल की मुराजअत के लिए सहाबा का फुकदान हो गया। यहां से मिल्लतेइस्लामिया की आज़माइश का दौर शुरू हुआ।

अब यही हज़रात अइम्मा-ए-अरबअ अपने-अपने इलाके में अवामुन्नास के लिए मरजए रूश्दोहिदायत बने हुए थे। इन हज़रात के पास कोई मसला आता तो कुरआन व हदीस पेश

करते या अपनी राय व कयास से काम लेते और अल्लाह से डरते हुए यह ऐलान करते कि اذاصح الحديث فهو مذهبی कि सहीह हदीस ही मेरा मज़हब है।

(१) इमाम अबू हनीफा रह० ने कूफा में ज़िन्दगी गुज़ारी जहां का सियासी शीराज़ह मुंतशिर था वह मक्तले हुसैन रहा, अह्ले तशया का मरकज़ था, वहां इमाम मौसूफ को बहुत कम अहादीस हासिल हुयीं जिसकी वजह से ज़्यादातर मसाएल वह राय कयास से हासिल करते थे और साथ ही यह हिदयात देते कि اتركو اقولی علی قول رسول الله ﷺ यानी नबी करीम सल्ल० की हदीस के मुकाबले मेरी बात रद कर दो।

(२) इमाम मालिक रह० ने शहर मदीना मुनव्वरह में ज़िन्दगी गुज़ार कर हत्तल मकदूर नबी करीम सल्ल० की अहादीस को जमा किया और अपनी किताब का नाम "मुअत्ता" रखा जिसकी वजह से मसाएल में उनकी राय बहुत कम मिलती है।

(३) इमाम शाफई रह० का पहला दौर बसरा में और दूसरा दौर मिस्र में गुज़रा उन्हों ने नबी करीम सल्ल० की अहादीस को अपनी किताब में जमा किया और इसका नाम "मस्नद शाफई" रखा।

(४) इमाम अहमद बिन हम्बल रह० भी जमा हदीस में मशगूल रहे और अहादीस नबवी सल्ल० का बहुत सा हिस्सा उनके हाथ आया अपनी किताब का नाम "मस्नद अहमद" रखा इमाम मौसूफ के सारे मसाएल राय व क्यास से बेनेयाज़ हैं।

बहैसियत मजमूई यह दौरे अइम्म-ए-अरबए भी तकवा के

लिहाज़ से कुरआन व हदीस की मुराजअत का था अगर किसी इमाम की जानिब से कोई राय कायम होती तो वह आरज़ी रहती। हदीस रसूल सल्ल० के मिलते ही बरख्वास्त हो जाती।

अकवाल अइम्म-ए-अरबए

अल्लाह तआला रहमतें नाज़िल फरमाए तमाम इमामों पर कि उन्हों ने कितनी हक बाते कही हैं।

अकवाल इमाम अबू हनीफा नोमान बिन साबित रहि०

(१) इमाम अबू हनीफा रहि० फरमाते हैं-

(क) حرام علی من لم یعرف دلیلی ان یفتی بکلامی (मीज़ानुश्शेरानी, अकदुल जैयद स-७०) कि मेरे कौल पर फतवा देना हराम है जबतक मेरी बात की दलील मालूम न हो।

(ख) اذاقلت قولا و كتاب الله يخالفه فاتر كو ا بكتا ب الله فقيل اذا كان خبر الرسول ﷺ يخالفه قال اتر كو اقولى بخير الرسول ﷺ فقيل اذا كان قول الصحابة يخالفه قال اتر كو قولى بقول الصحابة (अकदुल जैयद स-७०) जब मेरा कौल कुरआन के रिखलाफ होतो उसे छोड़ दो। जब आप का कौल हदीस के खिलाफ हो? फरमाया उस वक्त भी छोड़ दो। जब सहाबा के फरमान के खिलाफ हो? कहा तब भी छोड़ दो।

(ग) اذا رايتم كلا منا يخالف ظاهر الكتاب و السنة فاعملوا بالكتاب والسنة واضربو بكلامنا الحائط (मीज़ानुश्शेरानी, अकदुल जैयद

स-५३) जब देखो कि हमारे कौल कुरआन व हदीस के खिलाफ हैं तो कुरआन व हदीस पर अमल करो और हमारे कौल को दीवार पर दे मारो।

(घ) इमाम अबू हनीफा का यह कौल अबेज़र से लिखने के लायक है फरमाते हैं: اذاصح الحديث فهو مذهبى (अकदुल जैयद) सही हदीस ही मेरा मज़हब है (ماجاء عن رسول الله ﷺ فعلى الراس والعين) (ज़फरूल अमानी) जो हदीस से साबित हो वह सर आखों पर है।

(ङ.) وقال الامام ابو حنيفة لا تقلدنى ولا تقلدن مالكا ولا غيره وخذالاحكام من حيث اخذو من الكتاب والسنة. كذافى الميزان (तोहफतुल ज़्या फिलब्यानुल अबरा) मेरी तकलीद न करना और न मालिक की और किसी और की तकलीद करना और एहकामेदीन वहां से लेना जहां से उन्होंने लिए हैं यानी कुरआन व हदीस से।

इन अकवाल से यह बात रोज़े रौशन की तरह साफ ज़ाहिर है कि इमाम अबू हनीफा का अकीदा मज़हब कुरआन व हदीस है जो मसला सहीह हदीस से साबित हो वह काबिले अमल है इसके अलावा फरमाया कि मेरी तकलीद न करना और न ही बगैर दलील के मेरी बातों को मानना, सिर्फ कुरआन व हदीस पर अमल करना इमाम मौसूफ ने कितनी हक बात कही है।

अल्लाह तआला उनकी कब्र को नूर से भर दे। आमीन

अकवाल इमाम मालिक बिन अनस रह०

(२) इमाम मालिक रह० फरमाते हैं-

(अ) مامن احدالا وهو ماخوذمن كلامه ومردودعليه الا رسول اللهﷺ(अकदुल जैयद स-७०) दुनिया में कोई शख्स ऐसा नहीं जिसकी बाज़ बातें दुरूस्त और बाज़ गलत न हों फिर उसकी दुरूस्त बाते ले ली जाती हैं और गलत रद कर दी जाती हैं सिवाए मुहम्मद सल्ल० के कि तमाम बातें सही व दुरूस्त और मान ही लेने के लायक हैं।

एक बात भी सारी ज़िन्दगी की छोड़ने के लायक नहीं।

(ख) انما انا بشر اخطی واصیب فانظر وافی رای فکل ماوافق الکتاب والسنة فخذوه و کل مالم یوافق فاترکوه(जलबुल मुनफेअता स-७४) मैं सिर्फ एक इंसान हूं, कभी मेरी बात दुरूस्त होती है और कभी गलत, तो तुम मेरी इस बात को जो कुरआन व हदीस के मुताबिक हो ले लिया करो उस बात को जो इसके खिलाफ हो छोड़ दिया करो।(यानी मेरी जामिद तकलीद मत करो)

(ग) فانظر وافی رای فکلما وافق الکتاب والسنة فخذوه وکلما یخالف فاترکوه पस तुम मेरी राय पर बगौर नज़र करो। अगर वह कुरआन व सुन्नत के मुवाफिक हो तो कुबूल करो और जब खिलाफ देखो तो तर्क कर दो।

अकवाल इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफई रह०

(३) इमाम शाफई रह० ने फरमाया-

(अ) قال الشافعی اذاقلت قولا وکان النبیﷺ قال خلاف قولی فما یصح من حدیث النبی اولی ولا تقلدونی(अकदुल जैयद स-५४) जब मैं कोई मसला कहूं और रसूलुल्लह सल्ल० ने मेरे खिलाफ

कहा हो तो जो मसला हदीस से साबित है वही ऊला है पस मेरी तकलीद मत करो।

(ख) انه کان یقول اذاصح الحدیث فهو مذهبی اذارایتم کلامی بخلاف الحدیث فاعملوا بالحدیث واضربو ابکلامی الحائط (अकदुल जैयद स-७०) जब सही हदीस मिल जाए (जानो कि) मेरा मज़हब वही है और मेरे कलाम को हदीस के मुखालिफ देखो तो (खबरदार) हदीस पर अमल करो और मेरे कलाम को दीवार पर दे मारो।

(ग) فقد صح عن الشافعی انه نهی عن تقلیده وتقلید غیره(अकदुल जैयद) इमाम शाफई ने अपनी तकलीद और गैर की तकलीद से मना किया है।

अकवाल इमाम अहमद बिन हम्बल रह०

(४) इमाम अहमद बिन हम्बल रह० के कौल

(अ) ولا تقلدنی ولا تقلد مالکاو لاالشافعی ولا الاوزاعی ولا الثوری وخذو الا حکام من حیث اخذو ا من الکتاب والسنة(अकदुल जैयदस-७०) हरगिज़ न मेरी तकलीद करना और न इमाम मालिक की और न इमाम शाफई की और न इमाम अवज़ाई की और न इमाम सूरी रह० की जहां से यह तमाम इमाम दीन के एहकाम व मसाएल लेते थे तुम भी वहीं (कुरआन व हदीस) से ही लेना।

(ख) وکان الامام احمد یقول لیس لا حد مع الله ورسوله کلام (अकदुल जैयद) किसी को अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के

साथ कलाम की गुंजाइश नहीं है।

इन चारों मोहतरम इमामों के अकवाल से यह बात साफ ज़ाहिर होती है कि उनहोंने रसूलुल्लाह सल्ल०ﷺ की हदीस के मुताबिक ما انا عليه واصحابى का रास्ता इख्तियार करने का हुक्म फरमाया यह सब के सब कुरआन व हदीस पर अमल करते थे। यही उनका मज़हब था उन चारों बुज़ुर्गों ने अपनी तकलीद से मना किया और किसी ने भी अलाहिदा मज़हब अपने नाम से मंसूब कर के मुरत्तब नहीं किया।

नबी करीम सल्ल० ने फरमाया:

"सबसे बेहतर अहले ज़माना मेरे हैं, फिर वह जो उनके बाद वाले हैं अपने ज़माने के बाद दो ज़मानों का ज़िक्र किया।" (बुखारी)

अल्लामा इब्ने हजर रह० फतहुलबारी पारा १४ बाब फज़ाएले असहाबुन्नबी सल्ल० में तहरीर फरमाते हैं तबा ताबईन दो सौ बीस (२२०) बरस तक ज़िन्दा रहे। उनके ज़माने में भी किसी खास शख्स की तकलीद व खास शख्स का मज़हब किसी का न था मोहतरम अइम्मा के शागिर्दों ने बाज़ मसाएल में इख्तिलाफ किया है इसलिए कि वह मुकल्लिद न थे।

अल्लामा सदन बिन अतान रह० तहरीर फरमाते हैं कि सहाबा कि ज़माना में किसी खास शख्स के नाम का मज़हब न था जिसकी तकलीद की जाती हो। बहर हाल कुरूने सलासा में तकलीद का वजूद न था।

कुतबे अहादीस की मज़ीद तफसील

नाम मुहद्दिस	वलादत	वफात	उम्र	साकिन	कुतबे हदीस
अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान फज़ल रह०	१८० हि०	२५५ हि०	७४ साल	समर कन्द	सुनन दारमी
अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल रह०	१९४ हि०	२५६ हि०	६२ साल	बुखारा	सही बुखारी
अबू दाऊद सुलैमान बिन अशअत रह०	२०२ हि०	२७५ हि०	७३ साल	बसरह	सुनन अबू दाऊद
अबुल हसन मुस्लिम बिन अल हुज्जाज रह०	२०४ हि०	२६१ हि०	५७ साल	नीशा पुर	सहीह मुस्लिम
अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा बिन सूरह अलतिर्मिज़ी रह०	२०६ हि०	२७६ हि०	७० साल	खरासान तिर्मिज़	जामे तिर्मिज़ी
अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन यज़ीद मारजा रबओ रह०	२०६ हि०	२७३ हि०	६४ साल	इराक	सुनन इब्ने माजा
अबू अब्दुर्रहमान बिन अहमद बिन शोऐब रह०	२१५ हि०	३०३ हि०	८८ साल	कज़वीन खरासान	सुनन नसाई
अबू हसन बिन अली बिन उमर रह०	३०५ हि०	३८५ हि०	८० साल	बगदाद	दार कुतनी
अबू बकर अहमद बिन हुसैन रह०	३८४ हि०	४५८ हि०	७४ साल	बैहकी नीशा पुर	बैहकी
शैख वलीयुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह खतीब रह०	४३५ हि०	५१६ हि०	८१ साल	मरवा तब्रेज़	मिशकात

मशहूर कुतबे अहादीस दर्ज की गई इसके अलावा कई कुतबे अहादीस लिखी गई हैं।

अकवाल शैख अब्दुल कादिर जीलानी रह०

शैख अब्दुल कादिर जीलानी रह० की वलादत ४७० हि० और वफात ५६१ हि० उम्र ६१ साल साकिन बगदाद, तसानीफः गनीतुत्तालबीन, फतूहुल गैब, फतह रब्बानी।

शैख अब्दुल कादिर जीलानी ने अपनी किताब फतूहुल गैब में कितनी ज़बरदस्त नसीहत व हिदायत फरमाई है मुलाहिज़ा हो।

> "कुरआन व हदीस को अपना ईमाम बना लो और गौर व फिक्र के साथ उनका मुताला कर लिया करो, इधर उधर की बहस व तकरार और हिर्स व हवस की बातों में न फंस जाओ। सिर्फ किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल पर अमल करो। और यह हकीकत समझ लो कि कुरआन के अलावा हमारे पास अमल के लिए कोई किताब नहीं और मुहम्मद सल्ल० के सिवा हमारा कोई रहबर नहीं, जिसकी हम ताबेदारी करें। कभी कुरआन व हदीस के दायरे से बाहर न हो जाना वरना ख्वाहिश्स नफ्सानी और अगवाए शैतानी तुम्हें भट का दें गे। याद रखो इंसान औलिया अल्लाह के दरजे पर भी किताबुल्लाह व सुन्नते रसूलुल्लाह सल्ल० पर अमल करने से ही पहुंच सकता है।"
>
> (फतूहुल गैब)

तकलीद शख्सी की तारीफ

(१) मुकल्लिद की दलील उसके मुजतहिद (इमाम) का कौल है न वह खुद तहकीक कर सकता है और न अपने इमाम की तहकीक पर गौर कर सकता है। (मुसल्लिमुस्सुबूत मुजतबाई)

(२) तकलीद कहते हैं गैर नबी (इमाम व मुजतहिद) के कौल को बगैर उसकी दलील जाने मान लेना। (जमउल जवामे)

(३) मुल्ला अली कारी ह० हफ्नी फरमाते हैं। गैर नबी (इमाम) के कौल को बगैर दलील मानना तकलीद है (शरह कसीदा अमाली)

(४) मुकल्लिद की दलील सिर्फ उसके इमाम का कौल ही है मुकल्लिद सिर्फ यही कहे कि मसला का हुक्म सिर्फ यही है क्योंकि मेरे इमाम की राय यही है और जो राय मेरे इमाम की हो मेरे नज़दीक सही है। (तौज़ीह तलवीह)

(५) इमाम का कौल मुकल्लिद की दलील है (तौज़ीह)

(६) सिर्फ इमाम के कौल पर अमल किया जाए और उसी के मुताबिक फतवा दिया जाए। (दुर्रे मुख्तार जिल्द अव्वल)

तकलीद का मतलब यह है कि मुकल्लिद जिस ईमाम की तकलीद कर रहा है वह सिर्फ उस ईमाम के कौल पर ही चले तहकीक करना दलील चाहना तकलीद को तोड़ देना है। बअल्फाज़े दीगर तकलीद इबारत हुई, गैर नबी की बातो को बगैर दलील शरई (कुरआन व हदीस) शरई हैसियत से मान लेना और उस पर अमल करना।

चौथी सदी

तकलीद शख्सी की इब्तेदा चौथी सदी में हुई (आलामुलमुक्केईन ज-१ स-२२२) तज़्केरतुल हुफ्फाज़ में स-२०२ में है कि रसूल करीम सल्ल० से लेकर तीनों ज़मानों खैरूल कुरून तक तकलीद का वजूद ही न था खैरूल कुरून के बाद तकलीद का वजूद पाया जाता है। चौथी सदी ता छटी सदी तक इसी तरह तकलीद का सिलसिला रहा।

सन्वारी का लिहाज़ करते हुए कुतुब फिकह की इब्तेदा को पेश किया जा रहा है।

पांचवीं सदी

नाम किताब	सन् तसनीफ	नाम किताब	सन् तसनीफ
१. कदूरी (फेकह की पहली किताब)	४२८ हि०	१५. खुलासा केदानी	नवीं सदी
२. हिदाया (फेकह की मोतबर किताब)	५६३ हि०	१६. हुलया	नवीं सदी
३. फतावा काज़ी खान	छटी सदी	१७. बहरूर्रायक	दसवीं सदी
४. फतावा अलवाहिया	छटी सदी	१८. गनीता	दसवीं सदी
५. मुनीयह मुसल्ला	छटी सदी	१९. तनवीरूल वसाएर	दसवीं सदी
६. कन्यह	सातवी सदी	२०. ज़खीरतुल उकबा	दसवीं सदी

७. कन्ज़ुद्दकाएक	७१० हि०	२१. दुर्रेमुख्तार	१०११ हि०
८. शरह वकाया	७४५ हि०	२२. फतावा खैरया	११वीं सदी
९. नेहाया	आठवीं सदी	२३. फतावा आलमगीरी	१११८ हि०
१०. अनाया	आठवीं सदी	२४. माला बदमुना	१२२५ हि०
११. तहावी	आठवीं सदी	२५. बेहिश्ती ज़ेवर	१२२५ हि०
१२. जामेउर्रमूज़	आठवीं सदी	२६. मुराकी उलफलाह	१२२५ हि०
१३. फतहुल कदीर	नवीं सदी	२७. उमदुर्रेआया	तेरहवीं सदी
१४. बज़ाज़ियह	नवीं सदी		

मज़कूरह मशहूर कुतुब फेकह के अलावा फेकह की कई किताबें लिखी गईं जिन्हें बखौफे तवालत दर्ज नहीं किया गया।

सातवीं सदी

सातवीं सदी हिजरी में पहली मरतबा चार काज़ी (निस्बत अइम्मा) मुकर्रर किए गए और रफता रफता मुकल्लेदीन की तादाद बढ़ती गई। और सलातीन का मैलान भी तकलीद ही की तरफ हो गया। हर एक बादशाह अपने ख्याल का काज़ी मुकर्रर कता गया और हर एक फिरका अपने अपने मज़हब को फरोग देता गया। नीज़ एक दूसरे को मगलूब व ज़ेर करने की तदबीरें करने लगा। बिल आखिर शाह बेबरस ने ६६५ हि० मिस्र व

काहिरा में चार मज़ाहिब के चार काज़ी हनफी, मालिकी, शाफई हंबली मुकर्रर किए। यही तरीका जारी हो गया सरकारी तौर पर चारों मज़ाहिब को बरहक तसलीम कर लिया गया और इस तरह बज़ोरे सलातीन यह नव ईजाद मज़हब इस्लाम में दाखिल किए गए।

दीन हक रा चार मज़हब साख्तन्द
रख्ना दर दीन नबी अन्दाख्तन्द ।

एक दीन इस्लाम के चार टुकड़े कर दिए गए यह निस्बत अइम्मा व निस्बत मज़हब सातवीं सदी से शुरू हुई। आठवीं सदी भी इसी हाल में गुज़री।

नवीं सदी

चार मोसल्ले बैतुल्लाह शरीफ में (निस्बत अइम्मा) कायम किए गए चुनांच अवाएल नवीं सदी में चारकसा के सुल्तान फरह बिन करकूक ने बैतुल्लाह शरीफ के एहाते में मोसल्ला इब्राहिमी के अलावा यह नव ईजाद चार मोसल्ले मौसूमा हनफी, मालिकी, शाफई, हंबली कायम कर दिए उसके बाद उन चारों मोसल्लों का मुआमला दाखिले दीन समझा जाने लगा अल्लामा शौकानी फरमाते हैं कि उस ज़माने के अहले इल्म ने उसकी शायद मुखलिफत की। (अल इर्शाद स-५८)

यह नव ईजाद चारों मोसल्ले नवीं सदी से तेरहवीं सदी तक बराबर कायम रहे।

चौदहवीं सदी

चारों मोसल्ले (निस्बत अइम्मा) बरखास्त किए गए।

बैतुल्लाह शरीफ में अइम्मा अरबआ के मौसूमा नव ईजाद मुसल्लों को बानी सऊदी हुकूमत शाह अब्दुल अज़ीज़ ने १३४३ हि० में बरखास्त करके सिर्फ एक मुसल्ला इब्राहीमी कदीम को जो इब्तेदा-ए-इस्लाम से था। हस्बे साबिक बर करार रखा जो अबतक मौजूद है इसी मुसल्ले ही से तमाम नमाज़ें अदा होती हैं।

हमने बुनियादी तौर पर सन् वारी तफसील के साथ हर नवइयत से अवामुन्नास को आगाह किया है इस हक गोई से वाकिफ होने के बाद इन्साफ की बात तो यह है कि कुरआन व हदीस पर अमल करने को लाज़िम पकड़ें। क्योंकि आखिरत की निजात का दारो मदार इसी पर मौकुफ है हर शोब-ए-हयात में अल्लाह का हुक्म क्या है और नबी सल्ल० का हुक्म क्या है और अमल क्या है? इस को मलहूज़ रख कर अमल करें इस तरह का अमल जन्नत की तरफ ले जाता है। आखिरकार एक दिन जन्नत में दाखिल हो जाओगे।

लाएह अमल

एहकामाते रब्बानी (कुरआनी)

(१) ﴿لقد كان لكم فى رسول الله اسوة حسنة﴾

"रसूलुल्लाह सल्ल० की ज़िन्दगी तुम्हारे लिए एक उम्दा और मुकम्मल नमूना है। बशर्ते कि अल्लाह तआला और कियामत के दिन पर ईमान हो।"

(अहज़ाब-२१)

इत्तेबाए रसूलुल्लाह सल्ल० की कुरआने करीम में बार-बार ताकीद की गई है।

(२) ﴿من يطع الرسول فقد اطا ع الله﴾

"जिसने रसूलुल्लह सल्ल० की इताअत की दर हकीकत उसने अल्लाह की इताअत की।"

(निसा-८०)

इस फरमाने आलीशान से रसूलुल्लह सल्ल० की फरमाँ बरदारी को अल्लाह तआला ने अपनी फरमाँ बरदारी फरमा कर हमारी ज़िन्दगी की रहनुमाई फरमाई है यह अल्लाह का एहसाने अज़ीम है इस एहसान का हम जिस कदर शुक्र अदा करें कम है।

(३) ﴿فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا﴾

"कसम है तेरे रब की यह मोमिन नहीं हो सकते जबतक यह तुझे आपस के झगड़े में हाकिम न बनाएं और फिर जो हुक्म तुम लगा दो उससे आज़ुर्दा न हों। बल्कि पूरे तौर पर

उसे मान लें।" (निसा-६५)

(४) ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَافَّةً وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ﴾

"ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे के पुरे दाखिल हो जाओ और शैतान की पैरवी मत करो क्योंकि वह तुम्हारा खुला दुशमन है।"

(बकरा-२०८)

(५) ﴿قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ﴾

"अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरी इत्तेबा करो, अल्लाह तुमसे मुहब्बत करेगा, और तुम्हारे गुनाह माफ कर देगा अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है।"

(आले इमारान-३१)

(६) ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنكُمْ فَإِن تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ﴾

ऐ ईमान वालो! फरमाँ बरदारी करो अल्लाह तआला की और फरमाबरदारी करो रसूलुल्लाह सल्ल० की और तुम में से इख्तियार वालों की, फिर अगर किसी चीज़ में इख्तिलाफ करो तो लौटाओ अल्लाह तआला की तरफ और

रसूल की तरफ़ अगर तुम्हें अल्लाह तआला पर और कियामत के दिन पर ईमान है।"

(निसा-५६)

(७) ﴿وَأَطِيعُوا اللّهَ وَرَسُولَهُ وَلا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ﴾

"हुक्म मानो अल्लाह का और फरमाँ बरदारी करो उसके रसूल की मत झगड़ो आपस में पस सुस्त हो जाओगे और उखड़ जाएगी हवा तुम्हारी।" (अन्फाल-४६)

(८) ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ﴾

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो और अपने आमाल को बरबाद न करो।" (सूरः मुहम्मद-३३)

इर्शाद नब्वी सल्ल० (हदीस)

(१) لا يو من احد كم حتى اكون احب اليه من والده وولده والناس اجمعين

तुम में से कोई शख़्स उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उसके नज़दीक उसके वालेदेन और औलाद और तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊं। (बुख़ारी ज-१ किताबुल ईमान)

(२) من احب سنتي فقد احبني ومن احبني كان معي في الجنة

जिसने मेरी सुन्नत से मुहब्बत की गोया उसने मुझ से मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की वह मेरे साथ जन्नत में होगा। (तिर्मिज़ी, मिश्कात-५६)

(३) فمن رغب عن سنتي فليس مني

जो मेरी सुन्नत से रूगर्दानी करेगा वह मुझ से नहीं। (यानी मेरी उम्मत में उसका शुमार न होगा)। (बुख़ारी व मुस्लिम)

(४) تركت فيكم امرين لن تضلو اما تمسكتم بهما كتاب الله و سنة رسوله

मैं तुम में दो चीज़े छोड़े जा रहा हूं जबतक तुम उन दोनों को मज़बूती से थामे रहोगे हरगिज़ गुमराह न होगे वह (दो चीज़ें) अल्लाह की किताब और उसके रसूल सल्ल० की सुन्नत हैं।

(५) كل امتي يد خلو ن الجنة الا من ابى قالو يا رسول الله ومن يابى قال: من اطاعني دخل الجنة ومن عصاني فقدابى

मेरी उम्मत के सारे लोग जन्नत में जाएंगे सिवाए उन लोगों के जिन्होंने इंकार किया सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल० इंकार किसने किया आप सल्ल० ने फरमाया जिसने मेरी इताअत की वह जन्नत में दाखिल होगा और जिसने मेरी नाफरमानी की उसने इंकार किया।

लिहाज़ा कुरआन व हदीस पर अमल के सिवा दूसरा रास्ता नहीं।

इन दलायल से साफ ज़ाहिर है कि मुसलमान की इब्तेदा और इन्तेहा यही कुरआन व हदीस है।

हमारा वतन जन्नत है

हमारा वतन जन्नत है जो हमेशगी वाला रहमत का मकाम है।

अल्लाह तआला ने आदम अलैहि० को बनाकर उनका मकाम रिशइश जन्नत करार दिया और आदम अलैहि० की पीठ से उनकी औलाद निकाली। (यानी कियामत तक पैदा होने वाली रूहें) खुद उन हीं को उनका गवाह बना दिया। जब अल्लाह तआला ने सवाल किया कि क्या मैं तुम्हारा परवरिश करने वाला नहीं हूं? तो सब ने जवाब दिया कि बेशक तू हमारा रब है।

और तमाम मलाएका वगैरह को हुक्म रब्बानी हुआ कि आदम को सज्दा करें उस हुक्म की फरमाँ बरदारी तमाम मलाएका ने की सिर्फ शैतान ने नाफरमानी की। जिसकी वजह से वह लानती और रांदए दरगाहे इलाही हुआ और जन्नत से निकाला गया। शैतान अज़ल से ही इंसान का खुला दुश्मन है इसी शैतान ने आदम को अल्लाह तआला के हुक्म की खिलाफवर्ज़ी पर भड़काया जो आदम अलैहि० से अल्लाह के हुक्म की नाफरमानी हुई उस बिना पर आदम अलैहि० को उनके पैदाइशी वतन जन्नत से ज़मीन पर उतारा गया। कुछ मुद्दत के बाद वह तौबा व इसतिग्फार करके अल्लाह तआला की फरमा बरादारी के साथ ज़िन्दीग गुज़ारकर इस दुनिया-ए-फानी से अपने वतन रूखसत हुए। इस लिहाज़ से हमारा असली वतन जन्नत है।

मेरे अज़ीज़ भाईयो! हम आखिरी नबी मुहम्मद सल्ल० के उम्मती हैं और खैरे उम्मत के लकब वाले हैं और हमारा अस्ली

वतन जन्नत है तो क्या यह तमन्ना नहीं है कि हम अपने वतन जन्नत को वापस जाएं?

जवाब सबका एक ही होगा, यह कि बेशक हम अपने वतन जन्नत में जाने के आरजू मन्द हैं, तो मेरे भाईयो! मैं यह अर्ज़ करूंगा कि बमूजिब फरमाने इलाही﴿اتبعو اما انزل اليكم من ربكم ولا تتبعوامن دونه اولياء﴾ (आराफ-३) उसीकी पैरवी करो जो तम्हारी तरफ तुम्हारे रब की जानिब से उतार गया है इसके सिवा और रफिकों की ताबेदारी में न लग जाना। इससे साफ ज़ारिह है कि हम कुरआन व हदीस पर अमल करके सीधा रास्ता तय करते हुए इस दारे फानी से अपने अस्ली वतन जन्नत को वापस हो जाएं।

इस आयते करीमा की रोशनी में किसी को यह हक हासिल नहीं होता कि कुरआन व हदीस को छोड़कर किसी उम्मती की पैरवी करे। अगर कोई ऐसी खिलाफ वर्ज़ी करता है तो वह अपने अस्ली वतन जन्नत के रास्ते से भटक कर दोज़ख की तरफ चला जाता है अल्लाह तआला के नाफरमानों व मुश्रिकों का ठिकाना दोज़ख है जो दायमी अज़ाब का मकाम है।

बिरादराने मिल्लत! संजीदगी से गौरो फिक्र करो कि .मकामे पैदाइश आर्ज़ी व फानी दुनिया के वतन से इंसान को किस कदर मुहब्बत होती है। इसका अन्दाज़ा उसी वक्त होता है जबकि इंसान अपने वतन से दूर दूसरे मकाम पर कई साल ज़िन्दगी गुज़ार ने के बाद अपने वतन वापस आता है। तो उसको कितनी खूशी होती है हांलाकि यह खुशी आर्ज़ी फानी दुनिया के वतन की

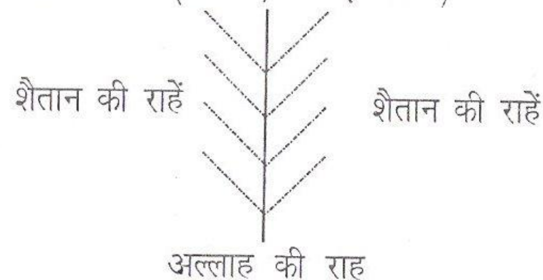
है।

ऐ अल्लाह के बन्दो! दायमी खूशी का मकाम जन्नत है उसके लिए अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह सल्ल० की फरमा बरदारी करते हुए इस दुनिया-ए-फानी से अपने अस्ली वतन जन्नत की तरफ रूखसत हो जाओ।

राहे जन्नत

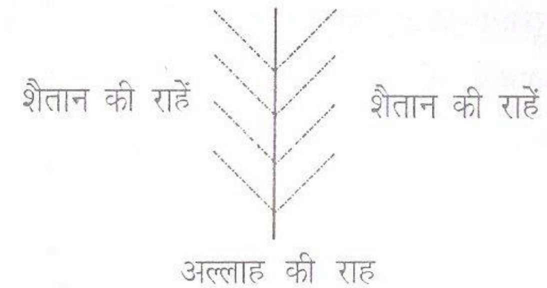
(१) अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० रिवायत करते हुए कहते हें कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने हमारे लिए एक (सीधी) लकीर खींची फिर फरमाया यह राह अल्लाह की है फिर आप सल्ल० ने (सीधे) खत के दाएं बाएं चन्द (तिरछे) खत खींचे और फरमाया यह राहे हैं उनमें से हर राह पर शैतान है जो पुकारता है उस राह की तरफ फिर आप सल्ल० ने कुरआन की यह आयत पढ़ी ﴿وَأَنَّ هَٰذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ﴾ (अल इनआम-१५३) और तहकीक यह है राह मेरी सीधी पस पैरवी करो उसकी और दूसरे रास्तों की पैरवी न करो।

वह नक्शा इसतरह है। (अहमद, नेसाई दारमी)



(२) हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्ल० की खिदमत में बैठे हुए थे कि आप सल्ल० ने क सीधी लकीर खींची फिर दो लकीरें (तिरछी) उसके दाएं और दो लकीरें (तिरीछी) उसके बाएं खींची। फिर दरमियानी (सीधी) लकीर पर हाथ रखकर फरमाया यह अल्लाह की राह है। (बाकी राहें अल्लाह की नहीं)

वह नक्शा इसतरह है। (इब्ने माजा)



इन दोनों हदीसों व शक्लों का मतलब एक ही है। रसूलुल्लाह सल्ल० ने दरम्यानी सीधी लकीर को अल्लाह की राह कहा है।

अल्लाह तआला कुरआने अज़ीमुश्शान में फरमाता है। ﴿مَنْ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ﴾ (निसा-८०) रसूल सल्ल० की इताअत अल्लाह की इताअत है।

इस आयते करीमा से अल्लाह कीराह का इंकिशाफ हो रहा है कि रसूलुल्लाह सल्ल० की पैरवरी करना उनके नक्शे कदम पर चलना गोया अल्लाह की राह पर चलना है इस तरह से अल्लाह

के रसूल सल्ल० के कौल व फेल की राह ता कियामत राहे अमल है जो हर नमूना ज़िन्दीग कुरआन व हदीस का मज़हर है इस से साफ ज़ाहिर है कि कुरआन व हदीस राहे जन्नत है इन्हीं पर अमल करके जन्नत में दाखिल हो जाएं।

बेरादराने मिल्लत! कुरअपन व हदीस पर अमल मकसदे जिन्दगी होना चाहिए चूंकि यह दुनिया मोहलत का मकाम है इसको एक रोज़ छोड़ना है इस लिए जिन्दगी के तमाम मनाज़िल किताब व सुन्नत के मुताबिक तय करते हुए आखिरी सांस छोड़ना ही कामयाबी की मंज़िल है वह आखरी मंज़िल जन्नत है।

मसलक सुन्नत पे ऐ सालिक चला जा बे धड़क
जन्नतुल फिरदौस को सीधी गई है यह सड़क।

पैगामे इलाही

﴿يا ايها الذين آمنوا قوا انفسكم و اهليكم نارا﴾ (तहरीम–६) ऐ ईमान वालो अपने आपको और अपने अहलो अयाल को दोज़ख की आग से बचाओ।

रोज़े कियामत उसकी बाज़ पुर्स होगी। इस निजात के लिए इस्लामी तालीम व तरबियत से अपने अहलो अयाल को वाकिफ कराके बाअमल बनाने की कोशिश करें। यह सदर खान्दान की बहुत अहम ज़िम्मेदारी है हिदायत देना अल्लाह तआला के इख्तियार में है।

पैगामे रसूल सल्ल०

(ان رسول الله ﷺ قال ما نحل والد ولده من نحل افضل من ادب حسن)
(तिर्मिज़ी, मिश्कात)

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया कि बाप अपनी औलाद को जो कुछ देता है उसके सबसे बेहतर अतिया उसकी अच्छी तालीम व तरबियत है।

तशरीहः वालिदेन का बेहतर अतिया औलाद की सही तालीम व तरबियत है इस्लाम ने बच्चों की तालीम व तरबियत के सिलसिले में बहुत ही ताकीदी हुक्म दिया है। इस हदीस के माना यह नहीं कि कोई अतिया ही न दिया जाए जायदाद वर्से में न छोड़ी जाए बल्कि अव्वलियत और सबसे ज्यादा अहमियत तालीम व तरबियत को दी जाए।

अपने आमाल को ज़ाए न करो

काफिर व मुसलमान के अमल मे तकाबुल के सिलसिले में एक बात अर्ज़ कर देना ज़रूरी समझता हूं वह यह कि आखिरत का इन्कान करने वाला काफिर कितना भी नेक काम करे उसको उखरवी सवाब नहीं मिलता। बल्कि दुनिया में कुछ नसीब हो जाता है बरखिलाफ उसके आखिरत का इकरार करने वाला

मुसलमान अगर कुरआन व हदीस के मुताबिक अमल न करे तो उसके कोई नेक काम ख्वाह कितना ही बेहतर हो वह अल्लाह तआला के पास काबिले कुबूल नहीं होता और न ही उसको जन्नत नसीब होती है।

मेरे मुअज़्ज़ज़ भाइयो! अब भी वक्त है ज़िन्दगी को गनीमत जानें और अपनी बेराह रवी का एतिराफ करके अल्लाह तआला से मगफिरत की दुआ करें। उसकी रहमत से नाउम्मीद न हो जाएं वह तौबा कबूल करने वाला है और तौबा करने वालों से बहुत खुश होता है। लिहाज़ा तौबा व इसतिग्फार करने में जल्दी करें कहीं ऐसा न हो की सूरज बजाए मशरिक के मगरिब की तरफ से तुलूअ हो जाए जब ऐसा होगा तो उस वक्त तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाएगा यह बात खूब याद रखें कि वह दिन कियामत का होगा जब अचानक वाके होगा। उसका इल्म किसी को नहीं है उस दिन यहां जैसा करोगे वैसा पाओगे ज़र्रह ज़र्रह का हिसाब होगा उसके मुताबिक जज़ा व सज़ा होगी।

यह दुनिया दारूल अमल है इसलिए खैरे उम्मत का फरीज़ा है कि इस्लाम खालिस, पैगामे इलाही और पैगामे रसूलुल्लह के ज़रीए अम्रबिल मारूफ व नह्य अनिल मुनकर के ज़रीय अवामुन्नास को ता कियामत आगाह करते रहें।

मेरी ज़िम्मेदारी हक बात को पेश करना है।

وما علينا الا البلاغ

अब बारगाहे रब्बुल इज्ज़त में दुआ करता हूं कि!

ऐ दिलों के फेरने वाले तमाम मुसलामन भाइयों के दिलों को अपने खालिस दीने इस्लाम पर अमल करने की तरफ मायल करदे और हिदायत नसीब फरमा। आमीन सुम्म आमीन

سُبْحَانَ رَبِّکَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ برحمتک یا ارحم الراحمین

तौहीद में शिर्क की मिलावट

(अल्लामा हाली रहमतुल्लाह अलैह)

करे गैर गर बुत की पूजा तो काफिर
जो ठहराए बेटा खूदा का तो काफिर
झूके आग पर बहरे सज्दह तो काफिर
कवाकिब में मानें करिश्मा तो काफिर
मगर मोमिनों पर कुशादा हैं राहें
परस्तिश करे शैक से जिस की चाहें
नबी को चाहे खूदा कर दिखाए
इमामों का रूत्बा नबी से बढ़ाएं
मज़ारों पे दिन रात नज़रें चढ़ाएं
शहीदा से जा जा के मांगे दुआएं
न तौहीद में कुछ खलल उससे आए
न इमान बिगड़े न इस्लाम जाए
वह दीन जिस से फैली तौहीद जहां में
हुआ जल्वहगर हक ज़मीं व ज़मां में
रहा शिर्क बाकी न वहमो व गूमां में
वह बदला गया आके हिन्दुस्तान म
हमेशा से इस्लाम था जिस पे नाजाँ
वह दौलत भी खो बैठे आखिर मुसलमां